Principles of Achievement Test Construction

उपलब्धि परीक्षण निर्माण के सिद्धान्त :- प्रमुख निम्नलिखित सिद्धान्त हैं -

(1) किसी प्रकार के परीक्षण से विषय विशेष के सभी उद्देश्यों की परीक्षा नहीं ली जा सकती है।

(2) परीक्षा का प्रारम्भ आसान होना चाहिए।

(3) भ्रामक प्रश्नों को परीक्षण में स्थान नहीं दिया जाना चाहिए।

(4) परीक्षण में प्रश्नों की संख्या पर्याप्त होना चाहिए।

(5) ऐसे प्रश्न का निर्माण करना चाहिए जिनसे छात्रों के ज्ञान व्यवहारिक क्षमता का मूल्यांकन हो सके।

(6) प्रत्येक प्रश्न स्वतंत्र होना चाहिए।

(7) प्रश्नों की भाषा सरल, संक्षिप्त

संक्षिप्त एवं स्पष्ट होना चाहिए।
(8) परीक्षा का उचित नामकरण करना चाहिए।
(9) परीक्षा सम्बन्धी सामान्य निर्देश प्रारम्भ में ही देना चाहिए।
(10) परीक्षा ~~सम्बन्धि~~ सम्बन्धी विशिष्ट उदाहरण समझा देना चाहिए।
(11) परीक्षार्थियों को उत्तर लिखने के पर्याप्त स्थान देना चाहिए।
(12) प्रश्नों को उचित क्रमांक पर व्यवस्थित करना चाहिए।
(13) परीक्षा की विश्वसनीयता एवं वैधता को बनाये रखने का प्रयास करना चाहिए।

Steps of Achievement Test Construction

उपलब्धि परीक्षण निर्माण के स्तर :

इसके निम्नलिखित स्तर हैं।

(1) परीक्षण की योजना बनाना (Planning)
(2) परीक्षण की तैयारी (preparation)
(3) परीक्षण का अंतिम प्रारूप (Final Try-out)
(4) परीक्षण का मूल्यांकन (Evaluation).

(1) ~~Preparation~~ (Planning) -

जीवन में किसी कार्य को करने से पूर्व उसकी एक निश्चित योजना बनायी जाती है। इसी प्रकार परीक्षण निर्माण की वास्तविक प्रक्रिया से पूर्व एक निश्चित योजना की आवश्यकता होती है इस स्तर पर निम्नलिखित कार्य किया जाता है।

(1) Review of existing Test.

(2) Reading other test material or literature.

Date ____
Page ____

(3) Defining the trait.

(4) The kind of Test.

(5) Types of items.

(6) Number of items.

(7) Time.

(8) Scoring produce.

(9) Type of Answer Sheet.

(10) Method of Preparing the Test.

(2) तैयारी (preparation)

परीक्षण की निश्चित एवं व्यवस्थित योजना बनाने के पश्चात ही परीक्षण निर्माता परीक्षण के प्रारम्भिक रूप की तैयारी करने लगता है। सर्वप्रथम उद्देश्यों एवं विषय-वस्तु के अनुरूप वह विभिन्न पदों का अन्य स्रोतों से चयन एवं स्वयं निर्माण करता है। वह पदों को अपने अनुभवों के आधार पर उपयुक्त मानकों, निर्मित परीक्षणों में से छाँटकर अथवा अन्य स्रोतों से रचना कर एकत्रित कर लेता है, जो कि परीक्षण की विषय वस्तु का प्रतिनिधित्व कर सके।

Scanned with CamScanner

परीक्षण पदों को दो तीन विषय विशेषज्ञों के पास भेजकर उनके विचार जानना चाहिए एवं उनके सुझावों के आधार पर संशोधन करना चाहिए। इसके अन्तर्गत परीक्षण निर्माता को निम्न बातों पर ध्यान रखना चाहिए।

(1) विभिन्न स्रोतों से परीक्षण पदों को एकत्रित किया जाता है।

(2) पदों के विभिन्न रूपों को सम्मिलित किया जाता है।

(3) पदों का रूप तथा विशेषज्ञ की सहायता से मूल्यांकन किया जाता है।

(4) परीक्षार्थी तथा परीक्षण निर्माता के लिए अलग-अलग निर्देश लिख दिया जाता है।

(5) अंकन विधि का निर्धारण किया जाता है।

(3) परीक्षण का अंतिम प्रारूप

परीक्षण की योजना एवं उसके प्रारंभिक रूप की रचना के

जो यह जानने का प्रयास किया जाता है कि परीक्षण कितना श्रेष्ठ, वैध एवं विश्वसनीय है। इसके निम्नलिखित उद्देश्य होते हैं।

(1) इस जाँच के द्वारा कमजोर व बेकार के पदों को परीक्षण से हटा दिया जाता है।

(2) परीक्षण के अन्तिम रूप में पदों की वास्तविक संख्या से इंगित किया जाता है।

(3) परीक्षार्थी एवं परीक्षक के उत्तरों में रुचि को व्यक्त किया जाता है।

(4) विभिन्न पदों के मध्य आन्तरिक सह सम्बन्ध ज्ञात किया जाता है।

(5) समस्त पदों को उप-भागों में व्यवस्थित किया जाता है।

(6) अन्तिम रूप की वास्तविक समय सीमा ज्ञात की जाती है।

(7) अंकन विधि को निश्चित किया जाता है। इस परीक्षण की जाँच दो भागों में की जाती है

(1) प्रथम जाँच (Pre-Try out)

(2) द्वितीय जाँच (Actual Try out)

Scanned with CamScanner